शैक्षिक सत्र–2026–27
विषय–संगीत (गायन)
कक्षा–11

तीन घण्टों का एक लिखित प्रश्न–पत्र 50 अंकों का पूर्णांक होगा। 50 अंक पूर्णांक की प्रयोगात्मक परीक्षा भी होगी।

खण्ड–क (संगीत विज्ञान) **25अंक**

इकाई–1 शास्त्रीय शब्दावली की परिभाषा और व्याख्या स्वर सप्तक का तारव (पिच), तीव्रता और गुण। **05 अंक**

इकाई–2 शुद्ध और विकृत स्वर, श्रुतियां शुद्ध स्वरों का आन्दोलन और तार पर शुद्ध स्वरों का स्थान। **05 अंक**

इकाई–3 आलाप, तान, मुर्की, कण कम्पन, मीड़, गमक, छूट, तानों के प्रकार (सपाट अलंकारिक आदि) **05 अंक**

इकाई–4 आरोह, अवरोह पकड़ वक्र वादी का आलोचनात्मक अध्ययन। **05 अंक**

इकाई–5 सम्वादी, अनुवादी, विवादी, वर्ज्य, नाद की परिभाषा एवं विशेषतायें। **05 अंक**

खण्ड–ख **25 अंक**

(संगीत का इतिहास और रागों का अध्ययन)

इकाई–6 **05 अंक**

गीतों की शैलियां और प्रकार–ध्रुपद, तराना, सरगम गीत, भजन त्रिवट, चतुरंग, रागमाला और होली।
घरानों का संक्षिप्त अध्ययन।

इकाई–7 **05 अंक**

प्रयोगात्मक परीक्षा के लिए प्रस्तावित पाठ्यक्रम में रागों की विशेषतायें।
स्वर विस्तार के माध्यम से रागों का विकास और भेद। कठिन अलंकारों की रचना।

इकाई–8 **05 अंक**

पाठ्यक्रम में प्रस्तावित तालों के ठेके, दुगुन, तिगुन, चौगुन का ज्ञान, तीनताल, झपताल, एक ताल।
गीतों के आलाप, तान, बोलतान मात्राओं सहित लिपिबद्ध करने की योग्यता।
छोटे स्वर समुदायों के आधार पर रागों को पहचानना और उनकी बढ़त की योग्यता।

इकाई–9 **05 अंक**

संगीत सम्बन्धी किसी सामान्य विषय पर छोटा निबन्ध।
भारतीय संगीत में आशु रचना का स्थान।
भारतीय संगीत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास(प्राचीन काल)।

इकाई–10 **05 अंक**

सारंग देव, तानसेन, अमीर खुसरों, भीमसेन जोशी, किशोरी अमोनकर एवं गंगूबाई हंगल की जीवनियां और भारतीय संगीत में उनका योगदान।

प्रयोगात्मक (गायन) **50 अंक**

(1) निम्नलिखित रागों का विस्तृत अभ्यास राग भीमपलासी, भैरव राग, मालकोस।

प्रत्येक में कम से कम एक द्रुत ख्याल तैयार होना चाहिये। उचित आलाप तान, मुर्की एवं अन्य लयपूर्ण तालबद्ध विस्तारण के साथ उनको गाने की योग्यता विद्यार्थी में अपेक्षित है। इन रागों में थोड़ी स्वतन्त्रता के साथ आशु रचना करने की शक्ति उन्हें दिखलानी चाहिये।

कठिन तालबद्ध रूपों और केवल निरर्थक वेग पर ही नहीं, वरन् सही ध्वनि, उच्चारण, स्पष्टता और गरिमापूर्ण अभिव्यक्ति एवं लय के स्वाभाविक प्रवाह पर बल होना चाहिये।

उक्त रागों के गीतों में कम से कम एक ध्रुपद अथवा धमार, एक विलम्बित ख्याल तथा एक तराना होगा। ध्रुपद अथवा धमार में दुगुन, तिगुन और चौगुन गाने तथा लिखने की क्षमता होनी चाहिये।

(2) गौड़ सारंग, हिंडोल, बहार नामक रागों का सामान्य रूप में अभ्यास। आलाप तान आदि की आवश्यकता नहीं है। केवल स्थायी और अन्तरा पर्याप्त होगा। विद्यार्थियों में इन रागों में से प्रत्येक का आरोह, अवरोह और पकड़ गाने की योग्यता होनी चाहिये और जब धीमी गति में अभिव्यक्ति आलाप के द्वारा प्रस्तुत किये जायें तब उन्हें पहचानने की क्षमता होनी चाहिये।

(3) निम्नलिखित में से प्रत्येक ताल में कम से कम एक गीत सीखना चाहिये।

तीन ताल, झप ताल, एक ताल, दादरा ताल, कहरवा ताल।

पाठ्यक्रम में प्रस्तावित सब तालों के ठेके ताल के साथ कहने एवं लिखने की योग्यता विद्यार्थी में होनी चाहिये।

(4) छोटे स्वर समुदायों को जब आकार में गाया अथवा बजाया जाये, विद्यार्थियों में उनके स्वर बतलाने की योग्यता होनी चाहिये। यह स्वर समुदाय पाठ्यक्रम में प्रस्तावित विस्तृत अध्ययन वाली रागों में से लिये

जायेंगे। संगीत गायन के प्रत्येक विद्यार्थी में पाठ्यक्रम के सभी तालों का साधारण ठेका तबले पर बजाने की योग्यता होनी चाहिये।

विशेष सूचना–अध्यापकों को वाह्य प्रयोगात्मक परीक्षक के विचारार्थ प्रत्येक विद्यार्थी के कार्यों की एक आख्या बनानी चाहिये।

उपचारात्मक शिक्षण हेतु चार यूनिट टेस्ट निम्नलिखित है–

(i) प्रथम यूनिट टेस्ट (MCQ आधारित)	जुलाई द्वितीय सप्ताह	20 अंक
	(10 अंक ग्रीष्मावकाश गृहकार्य + 10 अंक यूनिट टेस्ट)	
(ii) द्वितीय यूनिट टेस्ट (वर्णनात्मक प्रश्न आधारित)	अगस्त अन्तिम सप्ताह	20 अंक
(iii) तृतीय यूनिट टेस्ट (MCQ आधारित)	नवम्बर अन्तिम सप्ताह	20 अंक
(iv) चतुर्थ यूनिट टेस्ट (वर्णनात्मक प्रश्न आधारित)	दिसम्बर अन्तिम सप्ताह	20 अंक

नोट– उपरोक्त यूनिट टेस्ट उपचारात्मक शिक्षण के अन्तर्गत विद्यालय स्तर पर लिये जायेंगे। इनके प्राप्तांक परीक्षफल में सम्मिलित नहीं किये जायेंगे।